International Insights
JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH
(IIJMR)
I S S N
3049-0847
Vol. 3 | Issue 3
2026

www.insightresearch.org.in ◆ the.editor.org@gmail.com ◆ Peer Reviewed & Refereed Journal

[अंबेडकरवादी दर्शन और जयप्रकाश कर्दम का उपन्यास 'छप्पर']

तेजेश्वर प्रसाद नोनिया
शोधार्थी, पीएच डी (हिंदी विभाग)
काजी नज़रुल विश्वविद्यालय
आसनसोल, पश्चिम बंगाल

सार :

उत्तरआधुनिक विमर्श के दौर में हिंदी साहित्य में अलग-अलग साहित्यिक धाराओं का विकास हुआ। समाज के कई ऐसे वर्ग जिन्हें सदियों से दबाया गया, शोषित और उत्पीड़ित किया गया, उन्हें उनके सम्मान और अधिकारीं से वंचित रखा गया। इसलिए विभिन्न विमर्श साहित्य के केंद्र में आये। जिनमें स्त्री विमर्श, दलित विमर्श, आदिवासी विमर्श, वृद्ध विमर्श, किसान विमर्श आदि। इसमें दलित विमर्श के साहित्य ने अपनी अलग पहचान बनायी है । दलित साहित्य का केंद्रीय आधार अम्बेडकरवादी चिंतन और बौद्ध दर्शन है। जयप्रकाश कर्दम दलित साहित्य के प्रमुख हस्ताक्षर हैं। उनका उपन्यास 'छप्पर' अम्बेडकर द्वारा दिए गए मूल मंत्र 'शिक्षित बनो, संगठित हो, संघर्ष करो' का ही साहित्यिक विकास है।

मुख्य शब्द : अम्बेडकरवादी चिंतन, बौद्ध दर्शन, दलित, सामाजिक संरचना, जाति-व्यवस्था, शिक्षा, धर्म, संघर्ष, शोषण, मानवीयता, समानता, अधिकार,एकता, आत्मसम्मान, सामाजिक चेतना, सामजिक परिवर्तन, क्रांति, प्रतिरोध, जागरण, सामाजिक मुक्ति

Received	Accepted	Published	Article Type
25/07/2026	30/08/2026	07/09/2026	Research Paper

© 2026 IIJMR | All Rights Reserved
www.insightresearch.org.in

Vol. 3, Issue 3, July-September 2026
doi.org/10.5281/zenodo.22648023

International Insights
JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH
(IIJMR)
I S S N
3049-0847
Vol. 3 | Issue 3
2026

www.insightresearch.org.in ◆ the.editor.org@gmail.com ◆ Peer Reviewed & Refereed Journal

हिन्दी दलित साहित्य भारतीय समाज की उस ऐतिहासिक पीड़ा, संघर्ष और परिवर्तनकारी चेतना का साहित्य है, जिसे सदियों तक मुख्यधारा के साहित्य में पर्याप्त स्थान नहीं मिला। यह साहित्य केवल दलित जीवन के दुःख-दर्द का वर्णन नहीं करता, बल्कि सामाजिक न्याय, समानता, आत्मसम्मान और मानवीय गरिमा की स्थापना का वैचारिक आंदोलन भी है। इसी कारण दलित साहित्य को केवल साहित्यिक विधा न मानकर सामाजिक परिवर्तन का सशक्त माध्यम माना जाता है। इस परिवर्तनकारी चेतना के मूल में डॉ. भीमराव रामजी अंबेडकर का दर्शन विद्यमान है, जिसने दलित समाज को शिक्षा, संगठन और संघर्ष का मार्ग दिखाया तथा सामाजिक लोकतंत्र की अवधारणा को भारतीय समाज के केंद्र में स्थापित किया।

डॉ. अंबेडकर ने भारतीय समाज की जाति-व्यवस्था को केवल सामाजिक संस्था नहीं, बल्कि मनुष्य की स्वतंत्रता, समानता और बंधुत्व के विरुद्ध एक अमानवीय संरचना माना। उन्होंने स्पष्ट कहा कि जाति व्यवस्था केवल श्रम का विभाजन नहीं, बल्कि श्रमिकों का विभाजन है। उनके अनुसार जब तक जाति का उन्मूलन नहीं होगा, तब तक सामाजिक लोकतंत्र की स्थापना संभव नहीं है। यही विचार आगे चलकर दलित साहित्य की वैचारिक आधारशिला बने।

हिन्दी दलित साहित्य में ओमप्रकाश वाल्मीकि, मोहनदास नैमिशराय, सूरजपाल चौहान, कँवल भारती, श्यौराज सिंह बेचैन तथा जयप्रकाश कर्दम जैसे रचनाकारों ने अंबेडकरवादी दृष्टि को साहित्यिक अभिव्यक्ति प्रदान की। इनमें **जयप्रकाश कर्दम** का भी महत्वपूर्ण स्थान है। उन्होंने कविता, कहानी, उपन्यास, आलोचना तथा बाल साहित्य जैसी अनेक विधाओं में लेखन किया, किन्तु उनका उपन्यास **'छप्पर'** हिन्दी दलित उपन्यास परंपरा की अत्यंत महत्वपूर्ण उपलब्धि माना जाता है।

'छप्पर' केवल एक दलित परिवार की समस्याओं की कथा नहीं है। यह भारतीय ग्रामीण समाज की जातिगत संरचना, सामाजिक विषमता, शोषण, शिक्षा के संघर्ष, आत्मसम्मान तथा सामाजिक परिवर्तन की कथा है। उपन्यास का केंद्रीय पात्र **चंदन** अंबेडकरवादी चेतना का प्रतिनिधि पात्र है। वह व्यक्तिगत सफलता तक सीमित नहीं रहता, बल्कि शिक्षा प्राप्त कर सम्पूर्ण दलित समाज के उत्थान के लिए कार्य करता है। इस दृष्टि से 'छप्पर' की रचना का आधार अंबेडकरवादी दर्शन है।

यह उपन्यास यह भी स्पष्ट करता है कि सामाजिक परिवर्तन केवल राजनीतिक सत्ता परिवर्तन से संभव नहीं है। इसके लिए शिक्षा, वैचारिक जागरण, संगठन तथा आत्मसम्मान आवश्यक हैं। यही कारण है कि उपन्यास में शिक्षा को मुक्ति का सबसे बड़ा साधन बताया गया है। यह विचार डॉ. अंबेडकर के प्रसिद्ध सूत्र–**"शिक्षित बनो, संगठित रहो, संघर्ष करो"**–का साहित्यिक विस्तार है।

आज वैश्वीकरण, उदारीकरण और सूचना-प्रौद्योगिकी के युग में भी जातिगत असमानता, सामाजिक बहिष्कार तथा अवसरों की विषमता जैसी समस्याएँ समाप्त नहीं हुई हैं। राष्ट्रीय अपराध अभिलेख ब्यूरो (NCRB) तथा अनुसूचित जाति आयोग की रिपोर्टें यह संकेत देती हैं कि अनुसूचित जातियों के विरुद्ध अत्याचार आज भी गंभीर सामाजिक चुनौती हैं। ऐसी स्थिति में 'छप्पर' जैसे उपन्यास केवल साहित्यिक रचना नहीं, बल्कि सामाजिक दस्तावेज के रूप में भी महत्वपूर्ण हो जाते हैं।

अंबेडकरवादी दर्शन का मूल उद्देश्य केवल दलितों का उत्थान नहीं, बल्कि सम्पूर्ण समाज में मानवीय मूल्यों की स्थापना है। स्वतंत्रता, समानता, बंधुत्व और सामाजिक न्याय जैसे मूल्य भारतीय संविधान की आत्मा हैं। 'छप्पर' इन मूल्यों को ग्रामीण जीवन के यथार्थ के माध्यम से मूर्त रूप देता है। उपन्यास में जातिगत भेदभाव, धार्मिक रूढ़ियाँ, आर्थिक शोषण तथा सामाजिक असमानता का चित्रण केवल समस्या के रूप में नहीं, बल्कि परिवर्तन की संभावना के रूप में भी किया गया है।

अंबेडकरवादी दर्शन केवल राजनीतिक विचारधारा नहीं, बल्कि सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक तथा नैतिक पुनर्निर्माण का दर्शन है। इसकी आधारशिला **स्वतंत्रता (Liberty), समानता (Equality) और बंधुत्व (Fraternity)** है। इस विचारधारा का मूल आधार बौद्ध दर्शन है। अंबेडकर का मानना था कि भारतीय समाज में लोकतंत्र केवल संविधान में नहीं, बल्कि सामाजिक जीवन में

© 2026 IIJMR | All Rights Reserved
www.insightresearch.org.in

Vol. 3, Issue 3, July-September 2026
doi.org/10.5281/zenodo.22648023

International Insights
JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH
(IIJMR)
ISSN
3049-0847
Vol. 3 | Issue 3
2026
www.insightresearch.org.in ◆ the.editor.org@gmail.com ◆ Peer Reviewed & Refereed Journal

भी स्थापित होना चाहिए। यदि सामाजिक जीवन जाति, छुआछूत और ऊँच-नीच पर आधारित रहेगा, तो राजनीतिक लोकतंत्र भी स्थायी नहीं रह सकता।

इसी विचारधारा का प्रभाव 'छप्पर' के प्रत्येक प्रमुख प्रसंग में दिखाई देता है। चंदन इस उपन्यास का नायक है, जो दलित समाज का प्रतिनिधित्व करता है। इस संदर्भ में प्रमुख पात्र चन्दन का कथन दृष्टव्य है, "खाने के लिए अच्छा भोजन, पहनने के लिए अच्छा कपड़ा और रहने के लिए अच्छा मकान कौन नहीं चाहता। मेरे कहने का तात्पर्य यह नहीं है कि हमें इस सबके लिए प्रयास नहीं करना चाहिए। मैं भी चाहता हूँ यह सब, लेकिन मैं सिर्फ़ यह कहना चाहता हूँ कि इसके साथ-साथ हमें इस बात को भी ध्यान में रखना चाहिए कि हमारी शिक्षा की सार्थकता और हमारे जीवन का श्रेय इस बात में है कि हमें अपने साथ-साथ अपने समाज के उत्थान और विकास की और भी ध्यान देना चाहिए।"1 चन्दन का यह कथन अंबेडकर के सिद्धांतों से पूरी तरह प्रभावित है। अंबेडकर ने भी दलित समाज के उत्थान एवँ सामाजिक समानता की प्राप्ति के लिए शिक्षित दलित युवकों को स्वयं नेतृत्व लेने की जिम्मेदारी की बात कही, "अखिल भारतीय सेड्यूल्ड कास्ट फेडरेशन के 30-1-45 को कानपुर में हुए अधिवेशन में भाषण देते हुए उन्होंनें यह स्पष्ट किया कि सामाजिक समता की इस लड़ाई में दलितों को ही महत्वपूर्ण भूमिका निभानी है। कमजोर वर्ग को संघटित होकर अपने अधिकार ख़ुद ही प्राप्त करने चाहिए।"2 उपन्यास का नायक शिक्षा, आत्मसम्मान और संगठन के माध्यम से सामाजिक परिवर्तन का मार्ग चुनता है। यही उसे पारंपरिक नायक से भिन्न बनाता है। अम्बेडकर के दर्शन का प्रमुख मूल्य या तत्व शिखित बनना है और यही मूल्य हमें उपन्यास के मुख्य पात्र चंदन के अंदर स्पष्ट दिखायी देती है। लेखन ने अपने मुख्य पात्र के चरित्र का निर्माण अम्बेडकरवादी दर्शन के आधार निर्मित करने का प्रयास किया है।

शिक्षा ही वह औजार है जिसकी सहायता से दलित, शोषित और पिछड़ी जातियों के समाज मुख्य धारा में अपने भागीदारी उपस्थित कर सामाजिक समानता की लड़ाई को मजबूती से लड़ सकते हैं एवं उत्थान के पथ पर अग्रसर हो सकते हैं। शिक्षा के महत्व को चंदन भी समझता है इसलिए वह कहता है, "नहीं-नहीं मैं पढ़ाऊँगा, मैं शिक्षित करूँगा उन्हें। मैं वाणी दूँगा, उनकी मूक जबान को। पढ़-लिखकर हमारे समाज के लोग ऊपर नहीं उठेंगे तो हमें ही कौन पूछेगा।"3

डॉ. भीमराव अंबेडकर ने शिक्षा को सामाजिक परिवर्तन का सबसे शक्तिशाली साधन माना। उनका प्रसिद्ध आह्वान–**"शिक्षित बनो, संगठित रहो और संघर्ष करो"**–केवल नारा नहीं, बल्कि सामाजिक मुक्ति की रणनीति था। उनके अनुसार अशिक्षा दलित समाज की सबसे बड़ी कमजोरी है, क्योंकि अशिक्षित व्यक्ति अपने अधिकारों, कर्तव्यों और संवैधानिक संरक्षण से अनभिज्ञ रहता है।

जयप्रकाश कर्दम के *छप्पर* में **चंदन** का चरित्र इसी विचार का साहित्यिक विस्तार है। चंदन शिक्षा को केवल नौकरी प्राप्त करने का माध्यम नहीं मानता, बल्कि उसे सामुदायिक जागरण का साधन बनाता है। उसकी दृष्टि व्यक्तिगत सफलता से आगे बढ़कर सामाजिक नेतृत्व की है। यही बिंदु उसे पारंपरिक उपन्यास-नायक से भिन्न और अंबेडकरवादी नायक के रूप में स्थापित करता है।

यहाँ कर्दम का आग्रह स्पष्ट है कि शिक्षा तभी सार्थक है जब वह सामाजिक चेतना, आत्मसम्मान और संगठन का आधार बने। यह दृष्टि अंबेडकर की उस अवधारणा से मेल खाती है जिसमें वे मानसिक दासता को सामाजिक दासता का मूल कारण मानते हैं। इसलिए चंदन भी लोगों को इकट्ठा कर समझाते हुए कहता है - "हमारे शोषण का आधार क्या है, हमारे उत्थान और विकास में कौन से तत्व बाधक हैं, यह जाने बिना सार्थक संघर्ष नहीं किया जा सकता। यह ज्ञान शिक्षा से ही हो सकता

© 2026 IIJMR | All Rights Reserved
www.insightresearch.org.in

Vol. 3, Issue 3, July-September 2026
doi.org/10.5281/zenodo.22648023

International Insights
JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH
(IIJMR)
I S S N
3049-0847
Vol. 3 | Issue 3
2026
www.insightresearch.org.in ◆ the.editor.org@gmail.com ◆ Peer Reviewed & Refereed Journal

है, इसलिए शिक्षा का होना बेहद जरूरी है। जीवन की लड़ाइयों को लड़ने के लिए शिक्षा सबसे ज़्यादा मारक और शक्तिशाली शस्त्र है। शिक्षा ही उत्थान और विकास का आधार है, इसलिए आप अपने अपने बच्चों को अवश्य पढ़ाइए।"4

धर्म समाज का एक महत्वपूर्ण संस्था है। भारतीय समाज का अधिकांश वर्ग धर्म के द्वारा ही संचालित होता है। धर्म हमें नैतिकता, इंसानियत और अनुशासन सिखाता और हमें संवेदनशील बनाता है। पर जिस धर्म के कारण एक विशेष वर्ग समाज से बाहर कर दिए गए। उन्हें शिक्षा, सम्मान, अधिकार, अवसर आदि से वंचित रख शोषित और प्रताड़ित किया गया हो उसके नजर में उस धर्म की कोई अहमियत नहीं। यही विचार अम्बेडकरवादी दर्शन का भी है। अम्बेडकर कहते हैं, "मैं आपको फिर से यह स्पष्ट कर देना चाहता हूँ कि धर्म मनुष्य के लिए है, मनुष्य धर्म के लिए नहीं है । जो धर्म तुम्हें मनुष्य के रूप में स्वीकार नहीं करना चाहता, जो धर्म तुम्हें पीने के लिए पानी नहीं देना चाहता, वह धर्म कहलाने के लायक नहीं है। जो धर्म तुम्हारे ज्ञान और शिक्षा के अधिकार छीन लेता है, जो धर्म तुम्हारे भौतिक उत्कर्ष में बाधा पहुँचाता है, वह धर्म कहलाने के लायक नहीं है।"5 इसलिए धर्म के संदर्भ में चंदन के विचार भी अंबेडकरवादी दर्शन से मेल खाते हैं। बो भी धर्म के इस मकड़जाल को अच्छी तरह से समझता है वह इसमें ख़ुद तो नहीं फसना चाहता साथ ही अपने समाज को को भी इससे बचने के लिए जागरूक करने की कोशिश करता है। वह भी कहता है, "समाज धर्म द्वारा प्रेरित और संचालित है, हमारी सामाजिक स्थिति धार्मिक आदर्शों का ही परिणाम है। धर्म ग्रंथ ही हमारे शोषण और अत्याचार की जड़ें हैं। इन जड़ों को उखाड़ फेंकने की जरूरत है।"6 अर्थात् मनुष्यता और इंसानियत ही धर्म का मूल तत्व होना चाहिए।

संविधान के रचयिता डॉ. बाबा साहेब अम्बेडकर के चिंतन में अपने देश के संविधान, न्याय, प्रशासन और क़ानून व्यवस्था के प्रति गहरी आस्था है। वे देश और समाज को संवैधानिक तरीक़े से चलाने के पक्ष में हैं। उन्होंने जितने भी सामाजिक क्रांति और अस्पृश्यता के ख़िलाफ़ सामजिक परिवर्तन के आंदोलन किए हैं वो संवैधानिक दायरे में रहकर अहिंसा के अपनाकर किया। सत्य, ईमानदारी और अहिंसा उनके दर्शन के सहायक तत्व हैं। यही तत्व हमें चंदन के चरित्र में भी दिखाई देता है जब वो आंदोलन आगे बढ़ाने के लिए वह समझाता हुआ कहता है कि, "सामानता और न्याय पाने को आतुर लोग कुछ भी कर गुजरने पर उतारू है। कितना तो समझता हूँ सबको की ख़ुद को काबू में रखें और हिंसा को ना अपनाएँ, अहिंसक तरीक़े से ही आंदोलन को आगे बढ़ाएँ।"7

अंबेडकरवादी दर्शन के मूल में न्याय, समता, स्वातंत्र्य, अधिकार, सम्मान, सद्भाव और बंधुत्व, है। अम्बेडकर के इस दर्शन का आधार बौद्ध दर्शन है। बौद्ध दर्शन में मूल में इन्ही मूल्यों को महत्व दिया गया है। इसी का बिकास हम अम्बेडकरवादी और फिर दलित साहित्य में देखने को मिलता है। आकाशवाणी पर भाषण देते हुए उन्होंने स्वयं कहा था कि, "शंकराचार्य के दर्शन के कारण हिंदू समाजव्यवस्था में जाति-संस्था तथा विषमता के बीज बोए गए। मैं इसे नकारता हूँ। मेरा सामाजिक दर्शन केवल तीन शब्दों में रखा जा सकता है। वे शब्द हैं- स्वतंत्रता, समता और बंधुभाव। मैंने इस दर्शन को फ्रेंच राज्य क्रांति से उधार नहीं लिया है। मेरे दर्शन की जड़ें धर्म में हैं, राजनीति में नहीं। मेरे गुरु बुद्ध के व्यक्तित्व और कृतित्व से मुझे ये तीन मूल्य मिले हैं।"8 इसी अम्बेडकरवादी दर्शन का प्रभाव चंदन के व्यक्तित्व और कृतित्व में देखने को मिलता है जब वह रजनी से कहता है - "हिंसा का जवाब हिंसा नहीं है रजनी! हिंसा का जवाब अहिंसा से देना चाहिए। हमारा संघर्ष न्याय और समानता के लिए है।"9

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि जयप्रकाश कर्दम का साहित्य इस अर्थ में विशिष्ट है कि वह केवल विद्रोह नहीं करता, बल्कि वैकल्पिक सामाजिक व्यवस्था का भी संकेत देता है। उनके पात्र हिंसा के स्थान पर शिक्षा, संगठन, संवैधानिक अधिकार और लोकतांत्रिक संघर्ष का मार्ग अपनाते हैं। यही उन्हें अंबेडकरवादी साहित्यकार के रूप में स्थापित करता है।

© 2026 IIJMR | All Rights Reserved
www.insightresearch.org.in

Vol. 3, Issue 3, July-September 2026
doi.org/10.5281/zenodo.22648023

International Insights
JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH
(IIJMR)
ISSN
3049-0847
Vol. 3 | Issue 3
2026

www.insightresearch.org.in ◆ the.editor.org@gmail.com ◆ Peer Reviewed & Refereed Journal

अंबेडकरवादी दृष्टि से देखने पर *छप्पर* का मूल कथ्य जातिगत उत्पीड़न के विरुद्ध चेतना का विकास है। यहाँ संघर्ष का केंद्र हिंसक प्रतिशोध नहीं, बल्कि शिक्षा, आत्मसम्मान, संवैधानिक अधिकार और सामाजिक संगठन है। यही इसे सामान्य यथार्थवादी उपन्यासों से अलग करता है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. कर्दम जयप्रकाश, छप्पर, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण 2017, पृष्ठ- 42-43
2. डॉ. रणसुभे सूर्यनारायण, डॉ. बाबासाहेब अम्बेडकर, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली, पाँचवा संस्करण 2023, पृष्ठ - 82
3. कर्दम जयप्रकाश, छप्पर, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण 2017, पृष्ठ- 44
4. कर्दम जयप्रकाश, छप्पर, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण 2017, पृष्ठ-45
5. डॉ. रणसुभे सूर्यनारायण, डॉ. बाबासाहेब अम्बेडकर, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली, पाँचवा संस्करण 2023, पृष्ठ -89
6. कर्दम जयप्रकाश, छप्पर, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण 2017, पृष्ठ-45
7. कर्दम जयप्रकाश, छप्पर, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण 2017, पृष्ठ-109
8. डॉ. रणसुभे सूर्यनारायण, डॉ. बाबासाहेब अम्बेडकर, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली, पाँचवा संस्करण 2023, पृष्ठ - 64
9. कर्दम जयप्रकाश, छप्पर, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण 2017, पृष्ठ-116

© 2026 IIJMR | All Rights Reserved
www.insightresearch.org.in

Vol. 3, Issue 3, July-September 2026
doi.org/10.5281/zenodo.22648023